मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद पर आधारित

विकल्प
एवं
अध्ययन बिन्दु

प्रणेता एवं लेखक
ए. नागराज
मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद

प्रकाशक :
जीवन विद्या प्रकाशन
दिव्यपथ संस्थान
अमरकंटक, जिला अनूपपुर - 484886 म.प्र. भारत

प्रणेता एवं लेखक :
ए. नागराज
सर्वाधिकार प्रणेता एवं लेखक के पास सुरक्षित

संस्करण : 2011
मुद्रण : 14 जनवरी 2016

सहयोग राशि : 50/- रुपये

जानकारी :
Website : www.madhyasth-darshan.info
Email : info@madhyasth-darshn.info

सदुपयोग नीति :
यह प्रकाशन, सर्वशुभ के अर्थ में है और इस प्रकाशन का कोई व्यापारिक उद्देश्य नहीं है। इसलिए, इसका पूर्ण अथवा आंशिक मुद्रण, निजी उपयोग (मानवीयता एवं सार्वभौम शुभ के अर्थ में) करने के लिए उपलब्ध है। इसके अन्यथा किसी भी अर्थ में प्रयोग (मुद्रण, नकल आदि) करने के लिए 'दिव्यपथ संस्थान' अमरकंटक, जिला अनूपपुर - 484886 म.प्र. भारत से, पूर्व में लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

Good Use Policy :
This publication is for 'Universal Human Good' and has no commercial intent. It may be used & reproduced (in part/s or whole) for personal use. Any reproduction, copy of the contents of this publication for non-personal use has to be authorised beforehand via written permission from 'Divya Path Sansthan' Amarkantak, Anuppur - 484886, M.P. India.

प्राक्कथन

मानव बंधुओं

अभी तक विगत से चली आयी ईश्वरवाद और भौतिकवाद की नजरिया से मानव का अध्ययन सम्पन्न नहीं हुआ। यह सूचना देते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता हूँ कि विकल्प अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन है। मध्यस्थ दर्शन-सहअस्तित्व में, से, के लिए मानव का अध्ययन संभव हो गया है।

इस विकल्प में आपको अवगत कराने का प्रयत्न है कि मानव का अध्ययन मानव चेतना सम्मत मूल्य शिक्षा विधि से सर्वसुलभ होने का सभी निरीक्षण, परीक्षण, सर्वेक्षण सम्पन्न हो चुका है। ऐसे केन्द्र में से एक **अभ्युदय संस्थान** छत्तीसगढ़ की सीमा में कार्यरत है।

इस सूचना में यह भी प्रस्तुत कर रहे हैं कि सर्व मानव समझदार न्याय पूर्वक जी सकता है, हर समझदार परिवार समाधान-समृद्धि पूर्वक जी सकता है। यह शिक्षा विधि से सर्व सुलभ होने की व्यवस्था है। आप अपने सद्विवेक से प्रस्तुत सूचनाओं से अवगत होंगे। यही विश्वास है।

आपका
ए. नागराज, प्रणेता
मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद
भजनाश्रम, अमरकंटक,
जिला-शहडोल (म.प्र.)

विकल्प

1. अस्थिरता, अनिश्चयता मूलक भौतिक रासायनिक वस्तु केन्द्रित विचार बनाम विज्ञान विधि से मानव का अध्ययन नहीं हो पाया। रहस्य मूलक आदर्शवादी चिंतन विधि से भी मानव का अध्ययन नहीं हो पाया। दोनों प्रकार के वादों में मानव को जीव कहा गया है।

विकल्प के रूप में प्राप्त अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिंतन विधि से मध्यस्थ दर्शन, सहअस्तित्ववाद में मानव को ज्ञानावस्था में होने का पहचान किया एवं कराया।

मध्यस्थ दर्शन के अनुसार मानव ही ज्ञाता (जानने वाला), सहअस्तित्वरूपी अस्तित्व जानने मानने योग्य वस्तु अर्थात् जानने के लिए संपूर्ण वस्तु है यही दर्शन ज्ञान है इसी के साथ जीवन ज्ञान व मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान सहित सहअस्तित्व प्रमाणित होने की विधि अध्ययनगम्य हो चुकी है।

अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन ज्ञान, मध्यस्थ दर्शन, सहअस्तित्ववाद-शास्त्र रूप में अध्ययन के लिए मानव सम्मुख मेरे द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

2. अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन के पूर्व मेरी (ए.नागराज, अग्रहार नागराज, जिला हासन, कर्नाटक प्रदेश, भारत) दीक्षा अध्यात्मवादी ज्ञान वैदिक विचार सहज उपासना कर्म से हुई।

3. वेदान्त के अनुसार ज्ञान ''ब्रह्म सत्य, जगत मिथ्या'' जबकि ब्रह्म से जीव जगत की उत्पत्ति बताई गई।

उपासना	:-	देवी देवताओं के संदर्भ में
कर्म	:-	स्वर्ग मिलने वाले सभी कर्म (भाषा के रूप में)
मनु धर्म शास्त्र में	:-	चार वर्ण चार आश्रमों का नित्य कर्म प्रस्तावित है।
कर्म काण्डों में	:-	गर्भ संस्कार से मृत्यु संस्कार तक सोलह प्रकार के कर्म काण्ड मान्य है एवं उनके कार्यक्रम है।

इन सबके अध्ययन से मेरे मन में प्रश्न उभरा कि -

4. सत्यम् ज्ञानम् अनन्तम् ब्रह्म से उत्पन्न जीव जगत मिथ्या कैसे है ? तत्कालीन वेदज्ञों एवं

विद्वानों के साथ जिज्ञासा करने के क्रम में मुझे :-

समाधि में अज्ञात के ज्ञात होने का आश्वासन मिला। शास्त्रों के समर्थन के आधार पर साधना, समाधि, संयम कार्य सम्पन्न करने की स्वीकृति हुई। मैंने साधना, समाधि, संयम की स्थिति में संपूर्ण अस्तित्व सहअस्तित्व होने, रहने के रूप में अध्ययन, अनुभवपूर्ण विधि से समझ को प्राप्त किया जिसके फलस्वरूप मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्व वाद वाङ्गमय के रूप में विकल्प प्रकट हुआ।

5. आदर्शवादी शास्त्रों के अनुसार- रहस्य मूलक ईश्वर केद्रित चिंतन ज्ञान तथा परम्परा के अनुसार- ज्ञान अव्यक्त अनिर्वचनीय

विकल्प के अनुसार - ज्ञान व्यक्त वचनीय अध्ययन विधि से बोध गम्य, व्यवहार विधि से प्रमाण सर्व सुलभ होने के रुप में स्पष्ट हुआ.

6. अस्थिरता, अनिश्चियता मूलक भौतिकवाद के अनुसार वस्तु केंद्रित विचार में विज्ञान को ज्ञान माना जिसमें नियमों को मानव निर्मित करने की बात कही गयी है। इसके विकल्प में सहअस्तित्व रुपी अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन ज्ञान के अनुसार अस्तित्व स्थिर, विकास और जागृति निश्चित सम्पूर्ण नियम प्राकृतिक होना, रहना प्रतिपादित है।

7. अस्तित्व केवल भौतिक रासायनिक न होकर भौतिक रासायनिक एवं जीवन वस्तुयें व्यापक वस्तु में अविभाज्य वर्तमान है यही "मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद" शास्त्र सूत्र है।

सत्यापन

8. मैंने जहाँ से शरीर यात्रा शुरू किया वहाँ मेरे पूर्वज वेदमूर्ति कहलाते रहे। घर-गाँव में वेद व वेद विचार संबंधित वेदान्त, उपनिषद तथा दर्शन ही भाषा ध्वनि-धुन के रुप में सुनने में आते रहे। परिवार परंपरा में वेदसम्मत उपासना-आराधना-अर्चना-स्तवन कार्य सम्पन्न होता रहा।

9. हमारे परिवार परंपरा में शीर्ष कोटि के विद्वान सेवा भावी तथा श्रम शील व्यवहाराभ्यास एवं कर्माभ्यास सहज रहा जिसमें से श्रमशीलता एवं सेवा प्रवृत्तियाँ मुझको स्वीकार हुआ। विद्वता पक्ष में प्रश्नचिन्ह रहे।

10. प्रथम प्रश्न उभरा कि -

ब्रह्म सत्य से जगत व जीव का उत्पत्ति मिथ्या कैसे ?

दूसरा प्रश्न -

ब्रह्म ही बंधन एवं मोक्ष का कारण कैसे ?

तीसरा प्रश्न -

शब्द प्रमाण या शब्द का धारक वाहक प्रमाण ?

आप्त वाक्य प्रमाण या आप्त वाक्य का उद्‌गाता प्रमाण ?

शास्त्र प्रमाण या प्रणेता प्रमाण ?

समीचीन परिस्थिति में एक और प्रश्न उभरा

चौथा प्रश्न -

भारत में स्वतंत्रता के बाद संविधान सभा गठित हुआ जिसमें राष्ट्र, राष्ट्रीयता, राष्ट्रीय-चरित्र का सूत्र व्याख्या ना होते हुए जनप्रतिनिधि पात्र होने की स्वीकृति संविधान में होना।

वोट-नोट (धन) गठबंधन से जनादेश व जनप्रतिनिधि कैसा ?

संविधान में धर्म निरपेक्षता - एक वाक्य, एवं उसी के साथ अनेक जाति, संप्रदाय, समुदाय का उल्लेख होना।

संविधान में समानता - एक वाक्य, उसी के साथ आरक्षण का उल्लेख और संविधान में उसकी प्रक्रिया होना

जनतंत्र - शासन में जनप्रतिनिधियों की निर्वाचन प्रक्रिया में वोट नोट का गठबंधन होना।

ये कैसा जनतंत्र है ? समानता व धर्म निरपेक्षता ?

11. इन प्रश्नों के जंजाल से मुक्ति पाने को तत्कालीन विद्वान, वेदमूर्तियों, सम्मानीय ऋषि महर्षियों के सुझाव से -

(1) अज्ञात को ज्ञात करने के लिए समाधि एक मात्र रास्ता बताये जिसे मैंने स्वीकार किया।

(2) साधना के अनुकूल स्थान के रूप में अमरकण्टक को स्वीकारा ।

(3) सन् 1950 से साधना कर्म आरम्भ किया।

सन् 1960 के दशक में साधना में प्रौढ़ता आई।

(4) सन् 1970 में समाधि सम्पन्न होने की स्थिति स्वीकारने में आया। समाधि स्थिति में मेरे आशा विचार इच्छायें चुप रहीं। ऐसी स्थिति में अज्ञात को ज्ञात होने की घटना शून्य रही यह भी समझ में आया। यह स्थिति सहज साधना हर दिन बारह से अट्ठारह घंटे तक होती रही।

समाधि, ध्यान, धारणा क्रम में संयम स्वयम् स्फूर्त प्रणाली मैंने स्वीकारी। दो वर्ष बाद संयम होने से समाधि होने का प्रमाण स्वीकारा। समाधि से संयम सम्पन्न होने की क्रिया में भी 12 घण्टे से 18 घण्टे लगते रहे। फलस्वरुप संपूर्ण अस्तित्व सह-अस्तित्व सहज रूप में रहना होना मुझे अनुभव हुआ। जिसका वाङ्गमय "मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद" शास्त्र के रुप में प्रस्तुत हुआ ।

12. सहअस्तित्व :- व्यापक वस्तु में संपूर्ण जड़ चैतन्य संपृक्त एवं नित्य वर्तमान होना समझ में आया।

सहअस्तित्व में ही :- परमाणु में विकासक्रम के रुप में भूखे अजीर्ण व परमाणु में ही विकास पूर्वक तृप्त गठनपूर्ण परमाणुओं के रूप में जीवन होना, रहना समझ में आया।

सहअस्तित्व में ही :- गठनपूर्ण परमाणु चैतन्य इकाई-जीवन रुप में होना समझ में आया।

सहअस्तित्व में ही :- भूखे व अजीर्ण परमाणु अणु व प्राणकोषाओं से ही सम्पूर्ण भौतिक व रासायनिक रचनायें तथा परमाणु अणुओं से रचित धरती तथा अनेक धरतियों का रचना स्पष्ट होना समझ में आया ।

13. अस्तित्व में भौतिक रचना रुपी धरती पर ही यौगिक विधि से रसायन तंत्र प्रक्रिया सहित प्राणकोषाओं से रचित रचनायें संपूर्ण वन-वनस्पतियों के रूप में समृद्ध होने के उपरांत प्राणकोषाओं से ही जीव शरीरों का रचना रचित होना और मनुष्य शरीर का भी रचना सम्पन्न होना व परंपरा होना समझ में आया।

14. सहअस्तित्व में ही :- शरीर व जीवन के संयुक्त रुप में मानव परंपरा होना समझ में आया।

सहअस्तित्व में से के लिए :- सहअस्तित्व नित्य प्रभावी होना समझ में आया। यही नियतिक्रम होना समझ में आया।

15. नियति विधि :- सहअस्तित्व सहज विधि से ही :-

(i) अस्तित्व में चार अवस्थाएँ

- पदार्थ अवस्था
- प्राण अवस्था
- जीव अवस्था
- ज्ञान अवस्था और

(ii) अस्तित्व में चार पद

- प्राणपद
- भ्रांति पद
- देव पद
- दिव्य पद

(iii) और

- विकास क्रम, विकास
- जागृति क्रम, जागृति है।

जागृति सहज मानव परंपरा ही मानवत्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी नित्य वैभव होना समझ में आया। इसे मैं सर्वशुभ सूत्र माना और सर्वमानव में शुभापेक्षा होना स्वीकारा फलस्वरूप चेतना विकास मूल्य शिक्षा, संविधान, आचरण व्यवस्था सहज सूत्र व्याख्या, मानव सम्मुख प्रस्तुत किया हूँ।

भूमि स्वर्ग हो, मनुष्य देवता हो
धर्म सफल हो, नित्य शुभ हो।

- ए. नागराज

विकल्प का स्वरुप कार्य-व्यवहार रुप में

16. विकास क्रम में पदार्थ अवस्था एवं प्राण अवस्था है।

पदार्थावस्था :- धरती में संपूर्ण प्रकार के खनिजों से सम्पन्न होने के उपरांत।

प्राणावस्था :- सभी प्रकार के वन बड़े छोटे जंगल अनेक प्रकार के वनस्पतियों से सम्पन्न होना पाया जाता है । वन खनिजों के संतुलन में मौसम संतुलित रहना, यह भी समझ में आया।

साथ में यह भी समझ में आया कि मानव जागृति क्रम में जीव चेतनावश जीता हुआ समुदाय परंपराओं में मानव ही पशु मानव, राक्षस मानव के रुप में छल, कपट, दंभ, पाखण्ड, द्रोह, विद्रोह, शोषण, युद्ध, साम, दाम, दण्ड, भेद रुपी कुचक्रवश सम्पूर्ण प्रकार के अपराध करना वैध मानकर जीना होता रहा जिससे धरती बीमार हो गई । खनिज कोयला, खनिज तेल और विकिरणीय धातुओं को धरती में से अपहरण करना धरती के साथ अपराध स्पष्ट है। इस क्रम में धरती बीमार हो गयी और मानव के रहने लायक बचेगी कि नहीं यह प्रश्नचिन्ह लग गया है। इसके विकल्प में प्रवाह बल से ऊर्जा प्राप्त करने का सुझाव है। सौर ऊर्जा संबंधी उपकरणों को सस्ता बनाने के लिए, हवा तरंग को ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करने के लिए सुझाव है। यह राष्ट्रीय योजना के अर्न्तगत सोचने के लिए मुद्दा सुझाया गया।

17. जीव चेतना का प्रमाण धरती पर सभी संविधानों में गलती को गलती से रोकना, अपराध को अपराध से रोकना, युद्ध को युद्ध से रोकना के स्वरुप में देखने को मिला। इसे वैध माना।

- शिक्षा में लाभोन्माद, कामोन्माद, भोगोन्मादी कार्य व्यवहार के लिए प्रोत्साहन देना।

- सभी प्रकार के प्रचार माध्यम भय और प्रलोभन के अर्थ में कार्यरत है यही मानव जाति की हैसियत है ऐसा मुझे समझ में आया ।

18. उक्त कारणों से उनमें विकल्प प्रस्तुत करने की स्वीकृति हुई जो :-

सहअस्तित्ववादी विधि से आवर्तनशील अर्थशास्त्र, व्यवहारवादी समाजशास्त्र, मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान शास्त्र प्रस्तुत है।

जिसमें जीवनमूल्य - सुख-शांति-संतोष-आनन्द, मानव लक्ष्य रुपी समाधान-समृद्धि-

अभय-सहअस्तित्व सहज परंपरा में दश सोपानीय व्यवस्था विधि से सफल होने का संभावना प्रमाण वर्तमान होना प्रस्तावित है।

19. मानवीय मूल्य = धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करुणा एवं मानव लक्ष्य - समाधान, समृद्धि, अभय (वर्तमान में विश्वास चारों अवस्थाओं के साथ) वर्तमान होना प्रस्तावित है।

मानव संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था सहज प्रमाण वर्तमान होना प्रस्तावित है यही सहअस्तित्व है।

स्थापित मूल्य - परस्पर संबंधों की पहचान, संबंधों में मूल्यों का निर्वाह होना ही संस्कृति नित्य उत्सव सहज वैभव अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या सहज प्रमाण वर्तमान होना प्रस्तावित है।

शिष्ट मूल्यों के साथ वस्तुओं का आदान, प्रदान, अर्पण, समर्पण क्रियाकलाप रुप में नित्य उत्सव होना ही मानव चेतना सहज वैभव है। यह भी प्रस्तावित है।

मानव चेतना ही व्यवहार में मानवत्व है। आचरण में नियम है।

20. मानवत्व समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व रुप में प्रमाण वर्तमान उत्सव है।

मानव चेतना सहज ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्मत सोच विचार योजना कार्ययोजना व्यवहार फल परिणाम विज्ञान विवेक ज्ञान सम्मत होना ही नित्य 'समाधान' उत्सव यही मानव चेतना सहज वैभव है। मानव चेतना सहज वैभव ही मानवत्व है।

ज्ञान - सहअस्तित्व रूपी
- अस्तित्व दर्शन ज्ञान
- जीवन ज्ञान
- मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान

विवेक -
- जीवन सहज अमरत्व
- शरीर सहज नश्वरत्व
- व्यवहार सहज नियम

मानवीयतापूर्ण आचरण-	०	स्वधन, स्वनारी, स्वपुरुष दयापूर्ण कार्य व्यवहार
	०	संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभय तृप्ति
	०	तन, मन, धन रुपी अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा
विज्ञान-	०	काल, क्रिया, निर्णयवादी ज्ञान
	०	क्रिया की अवधि = काल
	०	क्रिया नित्य वर्तमान

सहअस्तित्व में सम्पूर्ण प्रकृति क्रिया स्वरुप में वर्तमान क्रिया

	-	श्रम, गति, परिणाम
परिणाम का अमरत्व	-	गठनपूर्ण परमाणु चैतन्य इकाई जीवन
श्रम का विश्राम	-	मानव चेतना सम्पन्न परंपरा अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या और सार्वभौम व्यवस्था सहज सूत्र व्याख्या = अभ्युदय

ऐषणा प्रवृत्ति = पुत्रेषणा, वित्तेषणा, लोकेषणा।

गति का गंतव्य - देव चेतना, दिव्य चेतना सहज वैभव रुप में उपकार प्रवृत्ति सर्वशुभ रुप में।

यह सब अध्ययनगम्य एवं जीना मानव में, से, के लिए।

<u>प्रयोजन संभावना</u>

21. धरती पर 700 करोड़ मानव अपराध कार्य प्रवृत्तियों से मुक्ति पाने के लिए हर नर-नारी का समझदार होना।

समझदारी से समाधान-सहज प्रमाण वर्तमान होना।

समाधान सम्पन्न हर परिवार में श्रम नियोजन पूर्वक समृद्धि प्रमाणित होना, समाधान समृद्धि

सम्पन्न हर परिवार में उपकार कार्य प्रवृत्तियों का प्रमाणित होना समीचीन है।

22. चेतना विकास मूल्य शिक्षा संस्कार सहित तकनीकी शिक्षण विधि से ही हर परिवार अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या तथा सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या रुप में जीना ही समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व सहज परंपरा वैभवित होना यही अपराध मुक्त परम्परा होना समीचीन है।

हर नर-नारी स्वयं में नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य सहज प्रमाण रुप में वर्तमान वैभव होना आवश्यक है ।

23. चेतना विकास मूल्य शिक्षा रुप में अध्ययन के लिए अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन ही मध्यस्थ दर्शन चार भागों में -

1. मानव व्यवहार दर्शन
2. मानव कर्म दर्शन
3. मानव अभ्यास दर्शन
4. मानव अनुभव दर्शन

24. दर्शनों पर आधारित विचार-वाद तीन भागों में -

1. समाधानात्मक भौतिकवाद
2. व्यवहारात्मक जनवाद
3. अनुभवात्मक अध्यात्मवाद

25. दर्शन-वाद के आधार पर शास्त्र तीन भागों में -

1. आवर्तनशील अर्थशास्त्र
2. व्यवहारवादी समाजशास्त्र
3. मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान शास्त्र

26. चिंतन - दर्शन-वाद-शास्त्र के आधार पर जीवन विद्या प्रबोधन प्रणाली स्पष्ट है।

मानवीय आचार संहिता रुपी 'संविधान व्यवस्था' (प्रकाशन प्रक्रिया में) अध्ययन के लिए प्रावधानित है, प्रस्तुत है।

27. इसी के साथ 'परिभाषा संहिता' प्रस्तुत है।

व्यक्तव्य

विकल्प के नाम से 27 मुद्दे के रुप में जो सूचना प्रस्तुत किया गया है इसके मूल अभिप्राय में अपना-पराया की दीवार से मुक्त, द्वेष मुक्त, अपराध मुक्त विधि से मानव चेतना पूर्वक समाधान समृद्धि सहित अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या रुप में जीना यह मानव परंपरा के लिए आवश्यकता बन चुकी है यदि मानव को इस धरती पर परंपरा रुप में रहना है । अस्तु, सकारात्मक भाग में निर्णय लेने की स्थिति में इन सूचनाओं के आधार पर कितने भी सकारात्मक उद्देश्य से प्रश्न हो सकते हैं। उन सबका उत्तर मेरे पास सुरक्षित है जो चाहे वे इसे पा सकते हैं ।

ए. नागराज
प्रणेता
मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्ववाद
भजनाश्रम, अमरकंटक,
जिला-अनूपपुर (म.प्र.)

मध्यस्थ दर्शन

अध्ययन बिन्दु

प्राक्कथन

मैं अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन अर्थात् मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) पर आधारित 'जीवन विद्या' प्रबोधन कार्यकलाप के लिये बिन्दुओं को निश्चित करते हुये प्रसन्नता का अनुभव करता हूँ। **इस प्रयास में अपेक्षा यही है कि हर जीवन विद्या प्रबोधक इंगित सभी बिन्दुओं पर ध्यान रखेंगे और सुस्पष्ट करेंगे।**

मैं अपने में इस तथ्य को अनुभव किया हूँ कि हर मानव का ज्ञान, विज्ञान व विवेक सम्पन्न होना आवश्यक है, यही अपना-पराया के बीच कल्पित दीवारों को हटाने में सार्थक व सक्षम स्रोत है।

जीव चेतना से मानव चेतना में गुणात्मक परिवर्तन अति आवश्यक हो गया है, क्योंकि धरती बीमार हो गई, हर समुदाय असुरक्षा के चक्र में फंसता जा रहा है। इस अनिष्टकारी, सर्वनाशकारी परिस्थिति का कारण मानव में निहित अमानवीयता ही है। अमानवीयता ही जीव चेतना का स्वरूप है। इससे मुक्ति पाने के लिये अर्थात् मानव चेतना से सम्पन्न होने के लिये अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) ही इंगित होने के अर्थ में जीवन विद्या कार्यक्रम है। इसे अध्ययनार्थ प्रस्तुत करते हुये स्वयं की सार्थकता को अनुभव करता हूँ।

भूमि स्वर्ग हो, मनुष्य देवता हो।
मानव धर्म सफल हो, नित्य शुभ हो ।।

प्रणेता एवं लेखक - ए. नागराज
मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद)
भजनाश्रम, नर्मदांचल
अमरकंटक (म.प्र.)

मध्यस्थ दर्शन - अध्ययन बिन्दु

उद्देश्य -

- जीव चेतना से मानव चेतना में गुणात्मक परिवर्तन हेतु
- मानवीयता सहज आचरण प्रमाण हेतु
- सर्वतोमुखी समाधान-समृद्धि सहित अखण्ड समाज एवं सार्वभौम व्यवस्था रूप में प्रमाण हेतु

*** वर्तमान स्थिति ***	*** आवश्यकता ***
* धरती ताप ग्रस्त *	* धरती संतुलित रहना *
* प्रदूषण *	* ऋतु संतुलित बना रहना *
* सभी मानव समुदाय असुरक्षित *	* धरती पर मानव का अक्षुण्ण रहना *

प्रस्तावना

समाधान	=	क्यों, कैसे का उत्तर
समृद्धि	=	परिवार सहज आवश्यकता से अधिक प्राकृतिक नियम सहज उत्पादन
अभय	=	परस्पर न्याय सुलभता
सहअस्तित्व	=	चारों अवस्थाओं में संतुलन
	=	नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य पूर्वक जीना

अस्तित्वमूलक मानव केंद्रित चिंतन ज्ञान ही अपने में सहअस्तित्व रूपी

1. अस्तित्वदर्शन ज्ञान
2. जीवन ज्ञान
3. मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान का बोध मानव को होना है।

   विवेक एवं विज्ञान

ऐसे ज्ञान का लोकव्यापीकरण करने के क्रम में कार्यक्रम :-

- लोक शिक्षा के रूप में जीवन विद्या
- मानवीय शिक्षा संस्कार के लिए - शिक्षा का मानवीयकरण
- परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था सहज प्रमाण

जीवन विद्या में सर्वप्रथम ''जीवन ही दृष्टापद है'' होने का अध्ययन।

दृष्टापद होने के फलस्वरूप 'जागृति' सहज प्रमाण होने का अध्ययन-

- 20वीं शताब्दी तक मानव परंपरायें अनेक समुदाय में पहचानने की समीक्षा
- व्यक्तिवाद, समुदायवाद पनपना सर्वविदित है
- समीक्षा के फल में ''समुदाय समाज नहीं, समाज समुदाय नहीं'' इसका बोध होना।

अस्तित्व दर्शन

- सम्पृक्तता -

व्यापक वस्तु में सम्पूर्ण एक एक वस्तु संपृक्त

भीगा	डूबा	घिरा
ऊर्जा सम्पन्नता बल सम्पन्नता चुम्बकीय बल सम्पन्नता	क्रियाशीलता ↓ सम विषम मध्यस्थ	नियंत्रण नियम संतुलन नियति
स्वत्व स्व=होना त्व=व्यवस्था सूत्र पूरकता उपयोगिता रूप में	आचरण त्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी	नित्य वर्तमान

श्रम लक्ष्य (विश्राम) समाधान अभ्युदय मानव देवमानव	गति (गन्तव्य) आचरण पूर्णता दिव्यपद दिव्यमानव	परिणाम (अमरत्व) जीवन (चैतन्य इकाई)

व्यापक वस्तु - व्यापक, पारगामी, पारदर्शी, निरपेक्ष ऊर्जा, चेतना।

(1) **मूल बिन्दु -** सहअस्तित्व (सत्ता में सम्पृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति) का अध्ययन। भास - आभास - प्रतीति - अनुभूति।

(2) **प्रकृति में संपन्नता -**

पदार्थावस्था	:	ऊर्जा संपन्नता, क्रियाशीलता
प्राणावस्था	:	ऊर्जा संपन्नता, क्रियाशीलता, स्पन्दनशीलता
जीवावस्था	:	ऊर्जा संपन्नता, क्रियाशीलता, स्पन्दनशीलता, आशा सम्पन्नता
ज्ञानावस्था	:	ऊर्जा संपन्नता, क्रियाशीलता, स्पन्दनशीलता, आशा सम्पन्नता, ज्ञान सम्पन्नता

- परिणामानुषंगी, बीजानुषंगी, वंशानुषंगी, संस्कारानुषंगी।

(3) **अस्तित्व में चार अवस्थायें -**

पदार्थावस्था, प्राणावस्था > जड़ प्रकृति - क्रियाशील, स्पन्दनशील

जीवावस्था, ज्ञानावस्था > चैतन्य प्रकृति - चेतना संपन्न (जीने की आशा रूप में), जीव चेतना, मानव चेतना

- भौतिक क्रिया, रासायनिक क्रिया, जीवन क्रिया।
- प्रत्येक एक में रूप-गुण-स्वभाव-धर्म अविभाज्य होना।
- स्थिति-गति अविभाज्य होना।

(4) **पदार्थावस्था में श्रम, गति व परिणाम**

प्राणावस्था में स्पंदन सहित श्रम गति परिणाम।

(5) परिणाम क्रम में अनेक यथास्थितियाँ, उपयोगिता, पूरकता सहित, अपने त्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदार।

(6) ठोस-विरल रूप के परमाणु, अणु के प्रजातियों से कोई भी धरती समृद्ध सम्पन्न होने के बाद स्वयंस्फूर्त विधि से यौगिक क्रिया में प्रवृति फलस्वरूप रसायन संसार (जल, क्षार, अम्ल, रचना तत्व, पुष्टि तत्व) का बनना।

इसका कारण - सहअस्तित्व नित्य प्रभावी

(7) इन चारों प्रकार के पदार्थ तत्व से संपन्न होकर धरती पर प्राणावस्था का उद्‌भव होना। यह अवस्था बीज-वृक्ष विधि द्वारा आवर्तनशील परम्परा है। यही प्राण पद चक्र है।

(8) प्राणावस्था तृप्त होने के उपरांत प्राणावस्था के अवशेषों से स्वेदज संसार की निष्पत्ति (प्रकटन)

(9) परमाणु में विकास = गठनपूर्ण परमाणु = जीवन (चैतन्य) पद में

(10) स्वेदज संसार से अण्डज संसार का प्रकट होना।

(11) अण्डज संसार में गुणात्मक परिवर्तन विधि से अनेक प्रजातियों का प्रकटन होना। (यह भी उपयोगिता विधि-पूरकता विधि से सहअस्तित्व को प्रमाणित करते हुए स्पष्ट)

(12) अण्डज संसार गुणात्मक परिवर्तन विधि से पिण्डज संसार को संबद्ध किया जाना।

(13) अण्डज संसार से भूचर, नभचर, जलचर तीनों प्रकार हुए। पिण्डज संसार तीनों में प्रकट होते हुए भी भूचर, सर्वाधिक हैं। प्रत्येक परंपरा का सहअस्तित्व विधि (पूरकता-उपयोगिता विधि) से प्रकट होना।

(14) पिण्डज संसार में रचनायें श्रेष्ठता की ओर गुणात्मक परिवर्तन से अनेक परंपरायें स्थापित हुई। उनमें से एक परंपरा है- मानव शरीर।

(15) मानव शरीर और जीवन के संयुक्त रूप में है। शरीर के साथ परस्पर पहचानने के क्रम में नस्ल, रंग के आधार पर अनेक प्रजाति मान लिए हैं। जबकि मानव शरीर एक ही प्रजाति का रहता है - मानव जाति एक है।

(इस तथ्य को 20वीं शताब्दी के बाद ही मनुष्य पहचानने योग्य हुआ। इसका प्रमाण अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन ज्ञान, मध्यस्थ दर्शन, सहअस्तित्ववाद विधि से स्पष्ट हुआ।)

जीवन

जागृत जीवन की दस क्रियायें

प्रत्यावर्तन परावर्तन

	जीवन बल	क्रिया	क्रिया	जीवन शक्ति
1.	आत्मा	अनुभव	प्रमाणिकता	प्रमाण
2.	बुद्धि	बोध	संकल्प	ऋतम्भरा
3.	चित्त	चिन्तन	चित्रण	इच्छा
4.	वृत्ति	तुलन	विश्लेषण	विचार
5.	मन	आस्वादन (मूल्यों का)	चयन (संबंधों की पहचान)	आशा

सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी ← **समाधान, समृद्धि संपन्न परिवार फलतः** → **अखण्ड समाज में भागीदारी**

- अनुभवगामी विधि में तुलन, साक्षात्कार-अवधारणा बोध-अनुभव
- अनुभव मूलक विधि से प्रमाण-संकल्प-चिंतन, चित्रण-तुलन, आस्वादन, सहज प्रमाण ।
- जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना।
- **समझने के लिए -** (1) नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य।

  (2) सहअस्तित्व, विकासक्रम, विकास, जागृतिक्रम, जागृति ।

- **अध्ययन विधि -** (1) मध्यस्थ दर्शन प्रस्ताव सार्वभौम, सर्वकालिक जीने में प्रमाणित हो सके (सर्व मानव स्वीकारने योग्य, जीने योग्य) ।

  (2) निरीक्षण, परीक्षण, सर्वेक्षण।

(16) **मानव व्यक्ति के रूप में -**

समाधान संपन्नता

जागृति संपन्नता

मानवीय आचरण, अखण्ड समाज व्यवस्था

(17) **मानव अपने मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी होना।**

मानवीयता पूर्ण आचरण

(अ) मूल्य = 30 मूल्य।

(ब) चरित्र = स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार।

(स) नैतिकता = धर्म नीति, राज्य नीति।

विवेक - जीवन का अमरत्व, शरीर का नशरत्व, व्यवहार के नियमों का बोध। लक्ष्य स्पष्ट होना। (सामाजिक, बौद्धिक, प्राकृतिक)।

विज्ञान - कालवादी, क्रियावादी, निर्णयवादी ज्ञान। लक्ष्य के लिए दिशा निर्धारण।

(18) **अखण्ड समाज का स्वरूप**

व्यवहार सूत्र- व्याख्या विधि से स्पष्ट होना।

(19) **सार्वभौम व्यवस्था दश सोपानीय विधि से अध्ययन होना।**

(20) **परिवार के रूप में -**

वैभव = समाधान सम्पन्नता, समृद्धि सम्पन्नता

(21) **अखण्ड समाज के रूप में -**

- समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व

- मानव जाति एक धर्म एक
- सर्वतोमुखी समाधान धर्म में जीने का बोध

यह अखण्ड समाज का सूत्र है।

मानवधर्म = सुख = समाधान=सुख

समस्या = दुःख

(22) **मानव संबंध, नैसर्गिक संबंधों का बोध कराने का कार्यक्रम।**

प्रधानतः मानव संबंध - सात

नैसर्गिक संबंध - तीन

मानव संबंध	**नैसर्गिक संबंध**
1. माता-पिता/पुत्र-पुत्री	1. जीवावस्था के साथ
2. भाई-बहन	2. प्राणावस्था के साथ
3. गुरु-शिष्य	3. पदार्थावस्था के साथ
4. साथी-सहयोगी	
5. मित्र-मित्र	
6. पति-पत्नी	
7. व्यवस्था संबंध	

(23) **संबंधों में निहित आशय मूल्यों का निर्वाह**

सात संबंध	**क्रिया**
माता-पिता /पुत्र-पुत्री	पोषण-संरक्षण/अभ्युदय, उपयोगिता, पूरकता
भाई-बहन	परस्पर अभ्युदय संयोग (सहयोग)
मित्र-मित्र	परस्पर पूरक
गुरु-शिष्य	प्रामाणिक-जिज्ञासु
साथी-सहयोगी	दायित्व-कर्त्तव्य

पति-पत्नी	यतीत्व, सतीत्व
व्यवस्था	भागीदारी

(24) **नैसर्गिक संबंधों में नियम, नियंत्रण, संतुलन का बोध**

(25) **मानव संबंधों में नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य सहज बोध सहित -**

जीवन मूल्य	-	चार
मानव मूल्य	-	छह
स्थापित मूल्य	-	नौ
शिष्ट मूल्य	-	नौ
वस्तु (उत्पादित) मूल्य	-	दो

का पूर्ण अध्ययन एवं बोध।

(26) **जीवन मूल्य**

समाधान = सुख

समाधान समृद्धि = शांति

समाधान समृद्धि अभय = संतोष

समाधान समृद्धि अभय सह अस्तित्व सहज प्रमाण = आनन्द

(27) मानवीय चेतना संपन्न मानव संबंध में स्थापित व शिष्ट मूल्य निम्न है :-

स्थापित मूल्य

(1) कृत्तज्ञता - प्राप्त सहायता उपकार के प्रति स्वीकृति प्रसन्नता व निरंतरता की स्वीकृति

(2) गौरव - विकसित (जागृत) को पहचान एवं उनके अनुरूप होने में उत्साह और निरंतरता

शिष्ट मूल्य

(1) सौम्यता - स्वयं स्फूर्त प्रणाली, पद्धति से स्वयं का नियंत्रण

(2) सरलता - ग्रंथि (तनाव) रहित अंगहार एवं उसका प्रकाशन

(3) श्रद्धा - प्रामाणिकता, श्रेष्ठता की ओर प्रवृत्ति एवं संकल्प सहित गति

(4) प्रेम - पूर्णता सहज प्रमाण;दया कृपा करूणा की संयुक्त अभिव्यक्ति। पूर्णता में नित्य रति, पूर्णता की सहज निरंतरता

(5) विश्वास - संबंध निर्वाह निरंतरता सहित मूल्यों के निर्वाह की निरंतरता

(6) वात्सल्य - अभ्युदय सर्वतोमुखी समाधान के अर्थ में पोषण संरक्षण

(7) ममता - स्वयं में, से, के लिए प्रतिरूपता सहज स्वीकृति, उत्सव निरंतरता

(8) सम्मान - व्यक्तित्व एवं प्रतिभा में श्रेष्ठता सहज प्रमाण का पहचान, स्वीकृति - प्रमाणित होने की प्रवृत्ति

(9) स्नेह - संतुष्टि प्रसन्नता, उत्सव में, से, के लिए स्वयं स्फूर्त मिलन सान्निध्य की निरंतरता

(3) पूज्यता - गुणात्मक परिवर्तन के लिए सक्रियता

(4) अनन्यता - जागृति पूर्णता के लिए योग्य पहचान, प्रमाण सहज निरंतरता

(5) सौजन्यता-सहकारिता, सहयोगिता, पूरकता, उपयोगिता

(6) सहजता - यथास्थिति सहज स्वयं में विश्वास, श्रेष्ठता का का सम्मान, प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन, व्यवहार में सामाजिक, उत्पादन में स्वावलंबन निरंतरता प्रमाण

(7) उदारता - प्रतिफलापेक्षा विहीन कर्त्तव्य दायित्व वहन, तन मन धन अर्पण

(8) सौहाद्रता-स्पष्टता से मूल्यांकन, क्रियाकलाप में स्पष्टता, सार्थकता

(9) निष्ठा - मानवीयता पूर्ण विचार व्यवहार में निरंतरता, मानवीयता सहित व्यवस्था सहज वर्तमान

सभी संबंधों का निर्वाह ही व्यवस्था है। अभिव्यक्ति, संप्रेषणा सहज प्रकाशन = भाषा भाव मुद्रा अंगहार प्रक्रिया सहित संप्रेषणा = सटीक भाषा (अर्थ संगत) = चित्र लेख रूप में = स्वीकृत संप्रेषणा = अभिव्यक्ति = संबंधों का निर्वाह सहज प्रमाण। किशोरावस्था तक पहचान संबोधन और दस वर्ष के पश्चात् समझ सहित निर्वाह

परस्परता में अपेक्षा - आवश्यकता।

(28) **संबंध निर्वाह मूल्य**

(1) **माता-पिता के साथ संतान का संबंध**

विश्वास निर्वाह और उसकी निरंतरता; गौरव, कृतज्ञता, प्रेम पूर्वक, सरलता, सौम्यता, अनन्यता भाव विधि सहित वस्तु सेवा समर्पण समेत तृप्ति - समाधान प्रमाण वर्तमान होना।

(2) **पुत्र-पुत्री (संतान का) के साथ माता-पिता अभिभावक - विश्वास निर्वाह की निरंतरता**

ममता, वात्सल्य, प्रेम, उदारता, सहजता, अनन्यता भाव

वस्तु सेवा समर्पण के रूप में वर्तमान होना।

(3) **भाई-बहन संबंध में विश्वास निर्वाह की निरंतरता**

सम्मान, गौरव, कृतज्ञता, प्रेम, सौहाद्रता, सरलता, सौजन्यता, अनन्यता भाव पूर्वक वस्तु सेवा समर्पण के रूप में है।

(4) **गुरु शिष्य के साथ विश्वास निर्वाह की निरंतरता**

प्रेम, वात्सल्य, ममता, अनन्यता, सहजता, उदारता भाव पूर्वक वस्तु सेवा समर्पण के रूप में वर्तमान

(5) **शिष्य गुरु के साथ विश्वास निर्वाह की निरंतरता**

गौरव, कृतज्ञता, सम्मान, प्रेम का भाव, सरलता, सौजन्यता, सहजता, अनन्यता का भाव पूर्वक जिज्ञासा सहित वस्तु और सेवा का अर्पण-समर्पण रूप में है।

(6) **पति-पत्नी के परस्परता में विश्वास निर्वाह की निरंतरता**

स्नेह, गौरव, सम्मान, प्रेम, निष्ठा, सरलता, सौहाद्रता, अनन्यता का भाव पूर्वक वस्तु सेवा समर्पण के रूप में।

(7) **साथी सहयोगी के साथ विश्वास निर्वाह की निरंतरता**

स्नेह, ममता, दया सहज निष्ठा, उदारता, दायित्व का कर्त्तव्य सहित वस्तु व सेवा

प्रदान करने के रूप में।

(8) **सहयोगी साथी के साथ विश्वास निर्वाह की निरंतरता**

गौरव, सम्मान, कृत्तज्ञता, सहजता, सरलता, सौहाद्रता,सौजन्यता भाव सहित सेवा समर्पण के रूप में है।

(9) **मित्र-मित्र के साथ विश्वास निर्वाह की निरंतरता**

स्नेह, सम्मान, प्रेमपूर्वक निष्ठा, सौहाद्रता, अनन्यता का भाव सहित वस्तु व सेवा समर्पण अर्पण के रूप में।

(10) **परिवार व्यवस्था में विश्वास निर्वाह की निरंतरता -**

मानवीयता पूर्ण आचरण सहित संबंधों का निर्वाह समेत किया गया व्यवहार कार्य - परिवार में, से, के लिए पोषण, संरक्षण समाज गति के लिए आवश्यकता से अधिक उत्पादन संपन्नता उपयोग-सदुपयोग प्रयोजन पूर्वक व्यवस्था प्रमाण वर्तमान - वैभव है।

(29) **पंचकोटि के मानव -** तीन वर्ग में -

1. अमानव - पशुमानव, राक्षसमानव
2. मानव - मानवीयतापूर्ण मानव
3. अतिमानव - देवमानव, दिव्य मानव

(30) सह अस्तित्व नित्य वर्तमान प्रकृति स्थितिपूर्ण सत्ता में सम्पृक्त स्थितिशील प्रकृति अर्थात् पूर्णता में गर्भित प्रकृति व्यापक सत्ता में जड़ -चैतन्य प्रकृति नित्य वर्तमान

(31) **मानव- ज्ञानावस्था में होते हुए**

- भ्रांति पद में - व्यक्तिवाद, समुदायवाद
- अमानव अर्थात् भ्रांतिपद में मानव दो प्रकार के पशु मानव, राक्षस मानव
- भय, प्रलोभनवश भ्रांति पद में

    (1) अधिमूल्यन

(2) अवमूल्यन

(3) निर्मूल्यन दोष वश

अमानव का स्वभाव → जीव चेतना वश हीनता, दीनता, क्रूरता

प्रवृत्ति → चार विषय प्रवृत्ति (आहार, निद्रा, भय, मैथुन)

दृष्टि → प्रिय हित लाभ

कार्यक्रम- सुविधा, संग्रह

पशु मानव = दीनता प्रधान

राक्षस मानव = क्रूरता प्रधान

(32) **मानव चेतना सम्पन्न = जाग्रत मानव**

जागृत मानव स्वभाव = धीरता, वीरता, उदारता

दृष्टि = न्याय

प्रवृत्ति = मानवीय परिवार - मानवत्व रूपी व्यवस्था एवं समग्र व्यवस्था में भागीदारी

= पुत्रेषणा, वित्तेषणा, लोकेषणा

(33) **देव पद सहज मानव**

मानव स्वभाव = धीरता, वीरता, उदारता, दया

दृष्टि = धर्म (सर्वतोमुखी समाधान)

प्रवृत्ति = मानवीय व्यवस्था

अखण्डता समाज एवं सार्वभौम व्यवस्था = लोकेषणा

(34) **दृष्टापद प्रतिष्ठा - दिव्य मानव**

जागृति पूर्ण मानव स्वभाव = धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करुणा

दृष्टि = सत्य प्रधान

प्रवृत्ति = सर्वशुभ

सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व में अखण्डता - सूत्र व्याख्या सार्वभौमता सहज वर्तमान में प्रमाण

(35) **दृष्टा पद प्रतिष्ठा सहज जागृति प्रमाण सम्पन्नता**

मानव ही दृष्टा, कर्त्ता, भोक्ता- जागृति पूर्वक

कार्य व्यवहार करने में स्वतंत्र फल भोगने में स्वतंत्र

जागृति पूर्वक किया गया सम्पूर्ण कर्म फल नियति विधि सहज होने के आधार पर फल भोगने में स्वतंत्र

नियति विधि का तात्पर्य -पूरकता, उपयोगिता सहज प्रमाण।

सकारात्मक फल आबंटन स्वीकार होता है; नकारात्मक फल कोई स्वीकार नहीं करता है।

(36) धरती अखण्ड राष्ट्र अखण्ड

मानव समाज अखण्ड राज्य अनेक

सभी राज्य अखण्डता सार्वभौमता के अर्थ में सार्थक

मानवीय परंपरा सहज : संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था

: शिक्षा, आचरण, संविधान, व्यवस्था

पूरकता उपयोगिता विधि से धरती पर वैभवित चारों अवस्थाओं में संतुलन

दश सोपानीय व्यवस्था

(37) **जन प्रतिनिधि विधि से-परिवार सभाओं में व्यवस्था सहज कार्यक्रमों में भागीदारी करने का बोध।**

(38) **व्यवस्था सहज 5 आयामों का स्पष्ट बोध एवं हृदयंगम**

(1) शिक्षा-संस्कार व्यवस्था

(2) न्याय-सुरक्षा व्यवस्था

(3) उत्पादन-कार्य व्यवस्था

(4) विनिमय-कोष व्यवस्था

(5) स्वास्थ्य-संयम व्यवस्था

(39) (1) **अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिन्तन पूर्वक सहअस्तित्ववादी विधि से :**

- **परिवार व्यवस्था में विश्वास निर्वाह निरंतरता**

  परिवारजन-समझदार-ज्ञान विज्ञान विवेक संपन्न

  परिवार में - मानवीयतापूर्ण आचरण सहित समाधान समृद्धि सहज प्रमाण में स्वत्व स्वतंत्रता अधिकार सम्पन्नता व वैभव निरंतरता अनूकुल परिस्थिति

  वर्तमान में विश्वास (अभय) सूत्र

- **वर्तमान में उपयोगिता पूरकता सहज अनूकुल परिस्थितियाँ :-**

  (1) मानवीय शिक्षा संस्कार सुलभता

  (2) न्याय सुरक्षा सुलभता

  (3) उत्पादन कार्य सुलभता

  (4) विनिमय कोष सुलभता

  (5) स्वास्थ्य, संयम सुलभता - सहज ज्ञान विज्ञान विवेक सुलभता ही अखण्डता सार्वभौमता सहज सूत्र दश सोपानीय व्यवस्था व्यक्त हो।

- हर जागृत मानव-जीने में जीवन मूल्य के अर्थ में मानव लक्ष्य प्रधान है

- अखण्ड समाज - सूत्र व्याख्या रूपी व्यवहार में - स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य प्रधान - वैभव - सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या रूपी भागीदारी में।

- मानव मूल्य प्रधान-प्रमाण वर्तमान-वैभव है।

- हर समझदार मानव जीवन मूल्य के अर्थ में मानव लक्ष्य प्रमाणित करना ही प्रमाण वर्तमान-परंपरा है। हर परिवार मानव प्रधानतः स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य सहित अखण्ड राष्ट्र समाज के वैभव के अर्थ में प्रमाण परंपरा वैभव है।

- **जाग्रत मानव परंपरा में -**

  जीने के वैभव में - जीवन मूल्य के अर्थ में मानव लक्ष्य प्रधान।

  अखण्ड समाज वैभव में - स्थापित व शिष्ट मूल्य प्रधान।

  सार्वभौम व्यवस्था सहज वैभव में मानव मूल्य प्रधान है।

39-2 (1) **अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन पूर्वक सहअस्तित्ववादी विधि से -**

परिवार समूह सभा

= दस परिवार से निर्वाचित

= दस जन प्रतिनिधि परिवार समूह सभा

मानवीयतापूर्ण आचरण सम्पन्न

= परिवार अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या

परिवार सभा, सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या अनुसार पंचमुखी कार्यक्रम प्रवृत्ति यथा

(1) मानवीय शिक्षा-संस्कार कार्य

(2) मानवीय न्याय-सुरक्षा कार्य

(3) मानवीय उत्पादन-कार्य

(4) मानवीय विनिमय-कार्य

(5) मानवीय स्वास्थ्य-संयम कार्य

प्रवृत्तियों का परीक्षण, निरीक्षण, समृद्धिकरण, आंकलन कर्त्तव्य संयुक्त सत्यापन

39-2 (2) **अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतनपूर्वक सहअस्तित्ववादी व्यवस्था विधि से-**

हर परिवार मानव में छह महिमा, यथा -

(i) स्वयं में विश्वास

(ii) श्रेष्ठता के प्रति सम्मान करने में विश्वास

(iii) स्वप्रतिभा में विश्वास

(iv) प्रतिभा के अनुसार व्यक्तित्व में विश्वास

(v) व्यवहार में सामाजिक

(vi) उत्पादन (व्यवसाय) में स्वावलंबन

सहज प्रवृत्ति प्रमाण से निरीक्षण, परीक्षण, आंकलन, आवश्यकतानुसार समृद्धिकरण संयुक्त सत्यापन

39-2 (3) **अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन पूर्वक सहअस्तित्ववादी व्यवस्था विधि से मोहल्ला, ग्राम, परिवार सभा**

दस परिवार समूह सभा में से निर्वाचित प्रतिनिधि

दस जन प्रतिनिधि परिवार सभा से मनोनीत पाँच समितियाँ, यथा -

(i) मानवीय शिक्षा-संस्कार समिति

(ii) मानवीय न्याय-सुरक्षा समिति

(iii) मानवीय उत्पादन-कार्य समिति

(iv) मानवीय विनिमय-कोष समिति

(v) मानवीय स्वास्थ्य-संयम समिति

मोहल्ला, ग्राम परिवार सभा सहज प्रयोजनों के अर्थ में - और दस परिवार समूह

सहज आवश्यकता के अनुसार समिति में कार्यरत व्यक्ति का दायित्व निश्चयन रहेगा।

39-2 (4) **अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन पूर्वक सह अस्तित्ववादी व्यवस्था विधि से**

मोहल्ला, ग्राम परिवार सभा

दस परिवार समूह सभा में से प्रत्येक सभा सदस्यों का संयुक्त सत्यापन

प्रत्येक समिति सदस्यों का संयुक्त सत्यापन और ग्राम मोहल्ला समिति स्वयं आवश्यकता अनुसार परीक्षण निरीक्षण पूर्वक -

सौ परिवारों का - समझदारी सम्पन्नता सहज यथास्थिति के ज्ञान सहज रूप में, ईमानदारी सहज यथास्थिति को विवेक व विज्ञान सहज रूप में, जिम्मेदारी सहज यथास्थिति का मानव संबंधों का पहचान

नैसर्गिक संबंध का पहचान, सहज रूप में भागीदारी सहज यथा स्थिति को मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी, उपयोगिता, पूरकता सहज रूप में

39-2 (5) **अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतनपूर्वक सहअस्तित्ववादी व्यवस्था विधि से-**

ग्राम मोहल्ला परिवार सभा -

जन शक्ति चेतना महिमा प्रवृत्ति व निष्ठा सहज वैभव का निरीक्षण परीक्षण पूर्वक सत्यापन

जन शक्ति को समझदारी के रूप में -

मानव चेतना सहज समझदारी ईमानदारी सहज संयुक्त रूप में -

महिमा को - छह स्वरूप में कथित

प्रवृत्ति का - पंचमुखी कार्यक्रम

के आधार पर पहचान

मूल्यांकन और सत्यापन

मानवीय शिक्षा-नीति का प्रारूप

1. आधार -

1-1 यह प्रारूप मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) पर आधारित है। यह दर्शन चार भागों में है -

1. मानव व्यवहार दर्शन
2. मानव कर्म दर्शन
3. मानव अभ्यास दर्शन
4. मानव अनुभव दर्शन

2. मानवीय शिक्षा प्रवर्तन कारण -

2-1 वर्तमान में मनुष्य में पाई जाने वाली सामाजिक (धार्मिक), आर्थिक एवं राजनैतिक विषमताएं ही समरोन्मुखता का कारण है।

3. प्रस्तावना-

जीव चेतना से मानव चेतना में परिवर्तन

3-1 मानवीयता की सीमा में धार्मिक (सामाजिक), आर्थिक, राज्यनैतिक समन्वयता रहेगी, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य प्राप्त अर्थ का सदुपयोग एवं सुरक्षा चाहता है। अर्थ की सदुपयोगात्मक नीति ही धर्म नीति, सुरक्षात्मक नीति ही राज्यनीति है। अर्थ के सदुपयोग के बिना सुरक्षा एवं सुरक्षा के बिना सदुपयोग सिद्ध नहीं है। इसी सत्यतावश मानव धार्मिक, आर्थिक, राज्यनैतिक पद्धति व प्रणाली से सम्पन्न होने के लिये बाध्य है।

4. उद्देश्य -

4-1 मानवीय चेतनावादी शैली को स्थापित करना।

4-2 मानवीयता की अक्षुण्णता हेतु मानवीय संस्कृति, सभ्यता तथा उसकी स्थापना

एवं संरक्षण हेतु विधि व व्यवस्था का अध्ययन पूर्वक प्रमाणित कराना है इससे मनुष्य के चारों आयामों (व्यवसाय, व्यवहार, विचार एवं अनुभूति) तथा पाँचों स्थितियों (व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं अन्तर्राष्ट्र) की एक सूत्रता, तारतम्यता एवं अनन्यता प्रत्यक्ष हो सकेगी। फलस्वरूप समाधानात्मक भौतिकवाद, व्यवहारात्मक जनवाद एवं अनुभवात्मक अध्यात्मवाद मनुष्य जीवन में चरितार्थ एवं सर्वसुलभ हो सकेगा। यही प्रत्येक मनुष्य की प्रत्येक स्थिति में बौद्धिक समाधान एवं भौतिक समृद्धि है और साथ ही यह मानव का अभीष्ट भी है।

4-3 व्यक्तित्व एवं प्रतिभा के संतुलित उदय को पाना।

4-4 समस्त प्रकार की वर्ग भावनाओं को मानवीय चेतना में परिवर्तन करना।

4-5 सहअस्तित्व एवं समाधानपूर्ण सामाजिक चेतना को सर्व सुलभ करना।

4-6 प्रत्येक व्यक्ति जन्म से ही न्याय का याचक है एवं सही करना चाहता है। उसे न्याय प्रदायी क्षमता तथा सही करने की योग्यता प्रदान करना।

4-7 प्रत्येक मनुष्य जीवन में अनिवार्यता एवं आवश्यकता के रूप में पाये जाने वाले बौद्धिक समाधान एवं भौतिक समृद्धि की समन्वयता को स्थापित करना।

4-8 शिक्षा प्रणाली, पद्धति एवं व्यवस्था की एक सूत्रता को मानवीयता की सीमा में स्थापित करना।

4-9 प्रकृति में विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति एवं इतिहास के आनुषंगिक मनुष्य, मनुष्य जीवन लक्ष्य, जीवन में समाधान तथा जीवन के कार्यक्रम को स्पष्ट तथा अध्ययन सुलभ करना।

4-10 विश्वविद्यालय, महाविद्यालय, विद्यालय, शाला एवं शिक्षा मंदिरों की गुणात्मक एकता एवं एकसूत्रता को स्थापित करना।

4-11 उन्नत मनोविज्ञान के संदर्भ में निरन्तर शोध एवं अनुसंधान व्यवस्था को प्रस्थापित करना।

4-12 प्रत्येक विद्यार्थी और व्यक्ति को अखण्ड समाज के भागीदार के रूप में प्रतिष्ठित करना।

4-13 शिक्षक, शिक्षार्थी एवं अभिभावक की तारतम्यता को व्यवहार शिक्षा के आधार

पर स्थापित करना।

4-14 विगत वर्तमान एवं आगत पीढ़ी की परम्परा के प्रत्येक स्तर में तारतम्यता, एकसूत्रता, सौजन्यता, सहकारिता, दायित्व तथा कर्त्तव्यपालन योग्य क्षमता का निर्माण करना।

4-15 मानवीय संस्कृति, सभ्यता, विधि एवं व्यवस्था सम्बन्धी शिक्षा को सर्वसुलभ बनाना।

4-16 प्रत्येक मनुष्य में अधिक उत्पादन एवं कम उपभोग योग्य क्षमता को प्रस्थापित करना।

4-17 व्यक्तित्व व प्रतिभा सम्पन्न स्थानीय व्यक्तियों के सम्पर्क में शिक्षार्थी एवं शिक्षकों को लाने की व्यवस्था प्रदान करना।

5 वस्तु विषय प्रणाली -

5-1 शिक्षा के सभी विषयों को सभी स्तरों में उद्देश्य की पूर्ति हेतु बोधगम्य एवं सर्व सुलभ बनाने, सार्वभौम नीतित्रय (धार्मिक, आर्थिक, राज्यनैतिक) में दृढ़ता एवं निष्ठा स्थापित करने तथा वर्तमान में पढ़ाये जाने वाले प्रत्येक विषय को समग्रता से सम्बद्ध रहने के लिये :-

(क) विज्ञान के साथ चैतन्य पक्ष का।

(ख) मनोविज्ञान के साथ संस्कार पक्ष का।

(ग) दर्शनशास्त्र के साथ क्रिया पक्ष का।

(घ) अर्थशास्त्र के साथ प्राकृतिक एवं वैकृतिक ऐश्वर्य की सदुपयोगात्मक एवं सुरक्षात्मक नीति पक्ष का।

(च) राज्यनीति शास्त्र के साथ मानवीयता के संरक्षणात्मक तथा संवर्धनात्मक नीतिपक्ष का।

(छ) समाज शास्त्र के साथ मानवीय संस्कृति व सभ्यता पक्ष का।

(ज) भूगोल और इतिहास के साथ मानव तथा मानवीयता का।

(झ) साहित्य के साथ तात्विक पक्ष का अध्ययन अनिवार्य है।

6. तकनीकी शिक्षण -

6-1 उत्पादन एवं निर्माण शक्ति की विपुलता के लिए निपुणता एवं कुशलता को पूर्णतया प्रशिक्षित कराने के लिए समृद्ध प्रणाली, व्यवस्था एवं अध्ययन रहेगा जिससे मनुष्य की सामान्य आकाँक्षा एवं महत्वाकाँक्षा से सम्बन्धित वस्तुओं का निर्माण सुगमता पूर्वक हो सके।

6-2 तकनीकी शिक्षण के साथ सामाजिकता तथा व्यक्ति में निष्ठा को व्यवहारिक रूप देने की व्यवस्था एवं प्रणाली अध्ययन के रूप में रहेगी।

6-3 शिक्षा के इस स्तर में अतिमानवीयता पूर्ण जीवन की संभावना को स्पष्ट करने योग्य अध्ययन रहेगा।

6-4 प्रत्येक विद्यार्थी को उत्पादन क्षमता में निष्णात बनाने के लिए अध्ययन होगा, जिससे अधिक उत्पादन एवं कम उपभोग सम्पन्न हो सके।

6-5 तकनीकी अध्ययन के साथ व्यवहारिक अध्ययन अनिवार्य रूप में रहेगा जिससे प्रत्येक व्यक्ति उद्यमशील एवं सामाजिक सिद्ध हो सके।

6-6 कृषि, उद्योग व स्वास्थ्य संबंधी पूर्ण तकनीकी शिक्षा प्रत्यक्ष रूप से रहेगी न कि औपचारिक रूप में रहेगी।

7 शिष्ट मंडल-

7-1 प्रत्येक राष्ट्रीय स्तर में एक शिष्ट मंडल रहेगा जिसमें शोध एवं अनुसंधान कर्ताओं का समावेश रहेगा। यही राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शिष्टमंडल शिक्षा नीति में प्रणाली तथा पद्धति की पूर्णता एवं दृढ़ता के प्रति दायित्व वहन का सजगता पूर्वक निर्वाह करेगा।

7-2 यही मंडल वैध सीमा में शिक्षण संस्थाओं के दायित्वों का निर्धारण, दिशा-निर्देश, पद्धति तथा प्रणाली संबंधी आदेश देने का अधिकारी होगा।

7-3 इनके द्वारा दी गई प्रस्तावनायें शासन-सदन द्वारा सम्मति पाने के लिए बाध्य रहेगी।

7-4 शिक्षा सम्बन्धी गुणात्मक परिवर्तन के लिए उपयुक्त प्रस्तावनाधिकार इसी मंडल में समाहित रहेगा।

7-5 व्यक्तिगत रूप में प्राप्त प्रस्तावनाओं को अवगाहन करने की व्यवस्था रहेगी। साथ ही उनके लिये सम्मान व पुरस्कार प्रदान करने की व्यवस्था भी रहेगी। जिससे व्यक्तिगत प्रतिभा के प्रति विश्वास हो सके।

7-6 प्रत्येक राष्ट्र का शिष्ट मंडल मानवीयता की सीमा में ही शिक्षा नीति, प्रणाली एवं पद्धति का प्रस्ताव करेगा जिससे मंडलों में परस्पर विरोध न हो सके।

7-7 शिक्षा की सार्वभौमिकता की अक्षुण्णता के लिये अंतर्राष्ट्रीय शिष्ट मंडल रहेगा जिससे अखण्ड समाज की निरंतरता बनी रहे।

8 व्यवस्था-

8-1 प्रत्येक शिक्षण संस्था अपने क्षेत्र में प्रौढ़ व्यक्तियों को साक्षर बनाने तथा प्रत्येक बालक-बालिका को शिक्षा प्रदान करने के लिए उत्तरदायी होगा।

8-2 प्रत्येक पद में दायित्व शिष्ट मंडल द्वारा निर्धारित रहेगा।

8-3 संस्थाओं का दायित्व व निर्वाह-पद्धति, प्रत्येक शिक्षण संस्था अपने कार्यक्षेत्र में पाई जाने वाली सामाजिक, आर्थिक, राज्यनैतिक और व्यवहारिक व्यवस्था की परस्परता में समस्याओं का सर्वेक्षण करने की व्यवस्था करेगी। साथ ही वैध प्रणाली पद्धति नीति व व्यवस्था का पालन करने के लिए उत्तरदायी रहेगी।

8-4 स्थानीय स्थिति के चित्रणाधिकार का दायित्व स्थानीय संस्था का होगा।

8-5 प्रत्येक सर्वेक्षण पूर्ण चित्रण स्तर के अधिकारियों द्वारा सम्पन्न किया जायेगा उसका परीक्षण करने का अधिकार उनसे वरिष्ठ अधिकारी को होगा। जिससे ही-

भूमि स्वर्ग होगी। मनुष्य ही देवता होंगे ।।
धर्म सफल होगा। नित्य मंगल ही होगा ।।

विकल्प में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा

अ - आ

1.	**अस्तित्व**	:-	होना, निरंतर होना, सहज रूप में रहना।
2.	**अविभाज्य**	:-	व्यापक वस्तु में एक-एक वस्तुओं का निरंतर क्रियाशीलता, निरंतर वर्तमान रहना।
3.	**आश्रम**	:-	श्रमपूर्वक मानव चेतना अनुसार प्रमाण प्रस्तुत करना। प्रयत्नपूर्वक मानव चेतना अनुसार प्रमाण प्रस्तुत करना ।
4.	**अनन्त**	:-	जो गणितीय विधि से गणना समझ में नहीं आया - होने की संभावना रहे। कल्पना में हो, समझ में नहीं आया हो - ज्ञात होने की संभावना हो।
5.	**अध्ययन**	:-	अनुभव सहज प्रकाश में स्मरण पूर्वक किया गया क्रियाकलाप एवं समझने का प्रयास।
6.	**अखण्ड समाज**	:-	मानव जाति, धर्म, राज्य व्यवस्था में एकरुपता संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था में एकरुपता सहज वर्तमान परंपरा।
7.	**अध्ययनगम्य**	:-	अध्ययनपूर्वक अस्तित्व सहज वस्तु समझ में आना।
8.	**अजीर्ण परमाणु**	:-	परमाणु के तृप्त होने में जितने अंशों की आवश्यकता सुनिश्चित रहती है उससे अधिक अंशों का गठन होना विकिरणीयता प्रभाव को प्रसारित करते रहने और अपने से कुछ अंशों को विसर्जित करने के लिए प्रयत्नशील रहना।
9.	**अणु**	:-	जड़ परमाणुओं का संगठित रुप, एक से अधिक परमाणु अंशों का संयुक्त क्रियाकलाप।
10.	**अपराध**	:-	पर-धन, पर-नारी, पर-पुरुष, पर-पीड़ाकारी कार्य

व्यवहार एवं संग्रह सुविधा को आजीविका मान लिया हुआ पशु मानव, राक्षस मानव।

11. **आवर्तनशीलता** :- जागृत मानव परंपरा में ही हर उत्पादन के लिए स्त्रोत बनाये रखते हुए उत्पादनपूर्वक समृद्ध होना।

12. **अभय** :- वर्तमान में विश्वास सम्पन्न मानव ही अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या सहज प्रमाण।

13. **अर्पण** :- कुछ देकर लेने की विधि से अर्पण। लेने की अपेक्षा सहित श्रम, सेवा, नियोजन क्रिया।

14. **अमरत्व** :- परिणाम का अमरत्व (गठनपूर्णता) = जीवन

15. **अभ्युदय** :- सर्वतोमुखी समाधान प्रमाण वर्तमान।

16. **आशा** :- मानव परंपरा में ही सुख पूर्वक जीने की आशा समाया है।

इ-ई

17. **इच्छा** :- दर्शन एवं उसके प्रगटन की संयुक्त चिंतन क्रिया का चित्रण ।

18. **ईमानदारी** :- सर्वशुभ समाधानकारी समझदारी को प्रमाणित करने के लिए निश्चित योजना तैयार करना।

उ-ऊ-ए

19. **उभय तृप्ति** :- कम से कम दो या दो से अधिक संबंधों में मूल्यों का निर्वाह मूल्यांकन उभयतृप्ति।

20. **उपकार** :- समझदार समृद्धि संपन्न होना, समझदार समृद्धिपूर्वक जीने देना और जीना।

21. **उपासना** :- उपायपूर्वक वांछित वस्तु का अध्ययन स्वीकृति प्राप्ति प्रमाण।

22. **ऐषणा** :- ऐषणाओं (पुत्रेषणा, वित्तेषणा, लोकेषणा) का प्रगटन ।

क

23.	**कर्म**	:-	उत्पादन कर्म (आहार-आवास-अलंकार) = सामान्याकांक्षा; (दूरदर्शन - दूरश्रवण - दूरगमन) = महत्वाकांक्षा सम्बन्धी यन्त्र, वस्तु, उपकरण का निर्माण।
24.	**कार्ययोजना**	:-	योजना को क्रियान्वयन करना।
	कार्य व्यवहार	:-	मानव के साथ व्यवहार, जड़ प्रकृति के साथ उत्पादन नियंत्रण के लिए कार्य।
25.	**कर्माभ्यास**	:-	प्राकृतिक ऐश्वर्य पर उपयोगिता मूल्य - कलामूल्य को स्थापित करने का क्रियाकलाप में पारंगत होना।
26.	**कामोन्माद**	:-	यौन विचार में लिप्त विवश मानव।

ख

27.	**खनिज**	:-	उत्खनन पूर्वक धरती में से प्राप्त होने वाले भौतिक-रासायनिक द्रव्य।

ग

28.	**गति**	:-	स्थानांतरण परिवर्तन। त्व सहित व्यवस्था समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

च

29.	**चेतना विकास**	:-	जीव चेतना से मानव चेतना श्रेष्ठ, मानव चेतना से देव चेतना श्रेष्ठतर, देव चेतना से दिव्य चेतना श्रेष्ठतम।
30.	**चैतन्य**	:-	गठनपूर्ण परमाणु, चैतन्य इकाई, जीवन।
31.	**चिंतन**	:-	इच्छाशक्ति में, से के, लिए परिमार्जन अनुभव प्रमाण मूलक सोच विधि सहज प्रगटन क्रिया।
32.	**जीवन ज्ञान**	:-	गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता को समझना समझाना।

33. **जीवन वस्तु** :- जीने की आशा विचार इच्छा ऋतंभरा अनुभव सहज प्रमाण प्रस्तुत होना।

34. **जड़** :- पदार्थ और प्राणावस्था सहज क्रिया कलाप जो जितना लंबा-चौड़ा-ऊँचा रहता है वह उतने ही विस्तार में क्रियाशील रहना।

35. **जगत** :- भौतिक-रासायनिक संसार।

36. **जीवावस्था** :- जीने की आशा सहित अनेक वंश के रुप में वर्तमान।

37. **जागृति सहज मानव परंपरा** :- समझदारी सहज सर्वतोमुखी समाधान के रुप में प्रमाणित करने का परंपरा। शिक्षा - संस्कार, न्याय सुरक्षा, उत्पादन कार्य, विनिमय कोष, स्वास्थ्य संयम विधि से प्रमाण।

38. **जीवन मूल्य** :- सुख, शांति, संतोष, आनंद।

39. **जिम्मेदारी** :- व्यवहार कार्य व्यवहार योजना में अनुभव सहज वैभव को परिणित करना।

द

40. **देव पद चक्र** :- मानव चेतना सहज प्रवृत्ति में गुणात्मक विकास रुप में देव चेतना और देव चेतना ह्रास होकर मानव चेतना में परिवर्तित होना।

41. **दिव्य पद** :- दिव्य चेतना उपकार प्रधान विधि नित्य वर्तमान, आचरण पूर्णता, उपकार प्रवृत्ति सहज प्रमाण।

42. **दर्शन** :- स्थिति-गति (रुप, गुण, स्वभाव, धर्म सहित स्वीकृति) मूल्यांकन वर्तमान प्रमाण।

43. **दृश्य** :- व्यापक वस्तु में, से, के लिए अविभाज्य रुप में होना।

44. **दृष्टा** :- स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य को समझना समझाना।

45. **दर्शन ज्ञान** :- स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य सहज समझ स्वीकृति प्रमाण।

46. **दीक्षा** :- समझने-समझाने व जीने के लिए निश्चित विधि स्वीकृति और निष्ठा।

ध

47. **धरती** :- पदार्थावस्था के अणुओं से रचित वृहत् रचना जिस पर प्राण, जीव व ज्ञानावस्था प्रकट हो ।

न

48. **नश्वरत्व** :- परिणाम परिवर्तनशीलता सहज परंपरा।

49. **नित्य वैभव** :- हर अवस्था और पद अपने यथास्थिति सहज परंपरा में वैभव एवं नित्य वर्तमान।

50. **नियति क्रम** :- पदार्थावस्था से प्राणावस्था, प्राणावस्था से जीवावस्था, जीवावस्था से ज्ञानावस्था सहज प्रगटन परंपरा विधि से त्व सहित व्यवस्था है।

51. **नियति विधि** :- पदार्थ, प्राण, जीव, ज्ञानावस्था का निश्चित आचरण ।

52. **नित्य** :- निरन्तर, सदा-सदा।

53. **नियन्त्रण** :- त्व सहित व्यवस्था - समग्र व्यवस्था में भागीदारी।

54. **नियम** :- आचरण सहज निश्चयन।

55. **न्याय** :- संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभयतृप्ति व निरन्तरता।

प

56. **परिणाम** :- परमाणु में परिणाम परमाणु में अंश संख्या घटना-बढ़ना।

57. **प्रमाण** :- परंपरा रूप में प्रकट होते रहना। प्रकटन की निरन्तरता ।

58.	प्रकृत्ति	:-	पहले से ही होने में प्रमाण और होने का सूत्र व्याख्या सम्पन्नता।
59.	**परमाणु**	:-	ज्यादा कम से मुक्त त्व सहित व्यवस्था। समग्र व्यवस्था में भागीदारी - उपयोगिता-पूरकता सहज मूल इकाई - जड़ प्रकृति के रुप में।
60.	**प्राणकोष**	:-	प्राण सूत्र - रचना तत्व - पुष्टि तत्व का संयुक्त रुप में रचित रचना और श्वसन-प्रश्वसन सहित रचना विधि सहज रचना प्रवृत्ति सम्पन्न इकाई ।
61.	**पदार्थावस्था**	:-	पद भेद से अर्थ भेद प्रगट करने वाला।
62.	**प्राणपद चक्र**	:-	पदार्थावस्था से प्राणावस्था एवं प्राणावस्था से पदार्थावस्था में परिणितियाँ।
63.	**प्रलोभन**	:-	शब्द, स्पर्श, रुप, रस, गंध इंद्रियों के अनुकूल के प्रति विवश होना।
			फ
64.	**फल**	:-	योजना के क्रियान्वयन से जो उपलब्धियाँ स्पष्ट हुई।
65.	**प्रणेता**	:-	प्रेरणा पाने का स्रोत। परिपूर्ण रुप में स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य के रुप में स्पष्ट करना।
			ब
66.	**ब्रह्म**	:-	व्यापक वस्तु का नाम।
67.	**बंधन**	:-	भ्रम, अतिव्याप्ति, अनाव्याप्ति, अव्याप्ति दोष।
			भ
68.	**भागीदारी**	:-	फल-परिणाम को स्वीकारने के लिए किया गया क्रियाकलाप।
69.	**भय**	:-	जीव चेतनावश संबंधों में विश्वास नहीं हो पाना और

प्रमाणित नहीं हो पाना। अपेक्षा बना रहना।

70. **भोगोन्माद** :- शब्द, स्पर्श, रुप, रस, गंध इंद्रियों में अनुकूलता करने में प्रवृत्ति और विवशता।

71. **भ्रांतिपद** :- जीवों के समान जीते हुए मानव का भ्रमित मानव पद में होना एवं भ्रमित मानव पद से पुनः जीव चेतना पद में होने का चक्र जीवावस्था से भ्रांत मानव रुप में होना और भ्रांत मानव जीव रुप में होने की आवर्तन क्रिया।

72. **भूखा परमाणु** :- तृप्त परमाणु में जितने संख्यात्मक अंशों का रहना है उससे कम रहना।

73. **भौतिक वस्तु** :- परमाणु अणु रचित स्वरुप में वर्तमान।

म

74. **मानव** :- मनाकार को साकार करने वाला तथा मनः स्वस्थता को प्रमाणित करने वाला।

75. **मानवीयतापूर्ण आचरण** :- मूल्य, चरित्र, नैतिकता सहज प्रमाण परंपरा।

76. **मध्यस्थ दर्शन** :- होने में, से, के लिए निरंतरता सहज सूत्र व्याख्या।

77. **मोक्ष** :- भ्रम मुक्ति, जागृति ।

78. **मानव मूल्य** :- धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करुणा।

79. **मूल्य शिक्षा** :- जीवन मूल्य, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य, उपयोगिता मूल्य, कला मूल्यों का कर्माभ्यास व्यवहाराभ्यास कराने वाला शिक्षा कार्यक्रम।

य-र

80. **योजना** :- योग-संयोग से वांछित उपलब्धि के लिए निर्णय करना।

81. **रहस्य** :- समझ ना हो पाना, स्पष्ट ना हो पाना। क्रिया मात्र को जानने में जो अपूर्णता है वह रहस्य है।

82. **रासायनिक वस्तु** :- यौगिक क्रियापूर्वक भौतिक आचरण से भिन्न आचरण में वर्तमान होना।

(जैसा पानी :- एक जलाने वाला एक जलने वाला वस्तु के योग होने से प्यास बुझाने वाली वस्तु का बनना ।)

83. **राष्ट्र** :- धरती सहज अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या।

84. **राष्ट्रीयता** :- अखण्ड समाज सूत्र व्याख्या।

85. **राष्ट्रीय चरित्र** :- धरती पर अखण्ड समाज रुप में समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व प्रमाण परंपरा रुप में वैभवित होना।

86. **रचना** :- धरती जैसा बड़े रचना में ही संपूर्ण प्रकार से हरियाली जंगल झाड़ी, पौधे, वनस्पतियाँ, औषधियाँ बीजवृक्ष विधि से परंपरा रुप में सम्पन्न क्रियाकलाप और जीव व मानव शरीर रचनाएँ।

87. **रसायन तंत्र** :- धरती पर पानी संयोग होने से पानी में क्षार और अम्ल का संयोग से पुष्टि तत्व, रचना तत्व प्रगट। इसी से उपजा हुआ अनेक रसायन तत्व का संयुक्त कार्यकलाप ।

88. **राक्षस मानव** :- जीव चेतना क्रम में क्रूरता पूर्वक जीने वाला ।

ल

89. **लाभोन्माद** :- कम देकर ज्यादा लेने की प्रवृत्ति और कार्य।

व

90. **विचार** :- क्रियान्वयन में तर्क संगत निश्चयनों की स्वीकृति।

91. **वाद** :- विश्लेषण कारण गुण सम्मत युक्त गणितात्मक विधि

से प्रमाण और वर्तमान।

92. **वर्ण** :- जो जिस अवस्था की चेतना विधि से सम्पन्न है वही उसका वर्ण (जीव चेतना - मानव चेतना-देव चेतना-दिव्य चेतना)।

93. **विकल्प** :- परंपरा सहज गति में प्राप्त समस्याओं का समाधान।

94. **व्यापक** :- सर्वत्र विद्यमान - जड़ चैतन्य प्रकृत्ति में, से, के लिए प्राप्त सत्ता। जड़ प्रकृति में साम्य ऊर्जा सम्पन्नता, चैतन्य प्रकृति में संवेदना एवं संज्ञानीयता।

95. **वर्तमान** :- वर्तते रहना। स्थिति-गति रुप में होते रहना।

96. **व्यवहाराभ्यास** :- संबंधों के साथ समाधान, समृद्धि पूर्वक मूल्यों चरित्र नैतिकता सहित जीने का अभ्यास।

97. **विद्वता** :- स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य सहज अनुभव प्रमाण। ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता वर्तमान प्रमाण।

98. **वस्तु** :- वास्तविकता प्रगट रहना।

(होना-रहना, होने-रहने की महिमा उपयोगिता-पूरकता सहज प्रमाण)

99. **व्यवहारवाद** :- संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभयतृप्ति, स्वधन स्वनारी-स्वपुरूष दयापूर्ण कार्य व्यवहार तन-मन-धन रुपी अर्थ का सदुपयोग सुरक्षा संबंधी तर्क प्रयोजन सहित क्रियान्वयन के लिए आवश्यक अध्ययन और वार्तालाप।

100. **वस्तु स्थिति सत्य** :- देश, काल, दिशा स्पष्ट।

वस्तुगत सत्य :- रुप, गुण, स्वभाव, धर्म सहज वर्तमान।

स-श-श्र

101. **संबंध** :-
(i) शरीर संबंध
(ii) मानव संबंध
(iii) शिक्षा संबंध
(iv) व्यवस्था संबंध
(v) उत्पादन संबंध
(vi) विनिमय संबंध
(vii) नैसर्गिक संबंध

102. **स्थिति सत्य** :- सत्ता में संपृक्त प्रकृति।

103. **समझदारी** :- ज्ञान, विवेक, विज्ञान।

104. **समर्पण** :- लेने की इच्छा से मुक्त प्रदान क्रिया।

105. **सभ्यता** :- विधि व्यवस्था में भागीदारी, व्यवस्था के अर्थ में सूत्र व्याख्या । समझ के रूप में सूत्र, जीने के रूप में व्याख्या ।

106. **संस्कृति** :- पूर्णता के अर्थ में किया गया क्रियाकलाप, कार्य व्यवहार, अभिव्यक्ति, संप्रेषणा, प्रकाशन ।

107. **समृद्धि** :- परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन।

108. **समाधान** :- समझदारी-ईमानदारी-जिम्मेदारी-भागीदारी समझदारी के अनुरूप फल परिणाम समझदारी सम्मत होना।

109. **स्थापित मूल्य** :-
1. विश्वास
2. सम्मान
3. स्नेह
4. कृतज्ञता
5. गौरव।
6. श्रद्धा
7. ममता
8. वात्सल्य
9. प्रेम

110. **संपृक्त** :- व्यापक पारगामी पारदर्शी सत्ता में जड़-चैतन्य प्रकृति डूबा-भीगा-घिरा। पूर्णता के अर्थ में, संपूर्णता के अर्थ में होना।

पूर्णता - गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता, आचरण पूर्णता, सम्पूर्णता = इकाई + वातावरण।

111. **सार्वभौम व्याख्या** :- दश सोपानीय परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था जिसमें बिना धन व्यय के जनप्रतिनिधि सुलभ होना। सभी प्रतिनिधि समझदारी समृद्धि से सम्पन्न होना। समझदारी सम्पन्न समृद्धि सहित परिवार का प्रतिनिधि होना एवं मानवीय शिक्षा संस्कार, न्याय सुरक्षा संस्कार, उत्पादन कार्य संस्कार, विनिमय कार्य संस्कार, स्वास्थ्य संयम संस्कार, कार्य में भागीदारी सहज परिवार प्रतिनिधि निर्वाचित परंपरा रुप में वर्तमान होना।

112. **सहअस्तित्ववाद** :- सत्ता में सम्पृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति सहज नित्य प्रभाव गतिविधि वर्तमान।

113. **सत्यापन** :- स्वयं में, से, के लिए यथास्थिति सहज वर्णन।

114. **संयम** :- समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी का प्रमाण परंपरा।

115. **समाधि** :- ''स्व'' होने की स्वीकृति एवं आशा, विचार, इच्छाएं चुप होने का दृष्टा होने के रूप में स्वीकृति।

116. **साधना** :- साध्य के लिए प्रयास सहज क्रियाकलाप।

117. **सत्य** :- सत्ता में संपृक्त प्रकृति - व्यापक वस्तु रूपी सत्ता में संपृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति; स्थिति सत्य, वस्तु स्थिति सत्य, वस्तुगत सत्य बोध सम्पन्नता।

118. **संतुलन** :- पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था, ज्ञानावस्था में परस्पर पूरकता-उपयोगिता।

119. **सहअस्तित्व** :- सत्ता में संपृक्त जड़-चैतन्य प्रकृति।

120. **सहअस्तित्व में विकास क्रम** :- परमाणु में अनेक अंशों का प्रस्थापन विस्थापन होना।

121. **सहअस्तित्व में विकास** :- परमाणु में गठनपूर्णता।

122. **सहअस्तित्व में जागृतिक्रम** :- शरीर व जीवन सहित शरीर को मानते हुए जीता हुआ मानव।

123. **सहअस्तित्व में जागृति** :- सत्ता में संपृक्त प्रकृति सहज ज्ञानावस्था में गठनपूर्णता, क्रियापूर्णता, आचरणपूर्णता सहज प्रमाण परंपरा है।

124. **सहअस्तित्व में जागृति सहज निरंतरता** :-

- जागृत मानव परंपरा क्रियापूर्णता - आचरणपूर्णता सहज निरंतरता।
- समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व में अनुभव प्रमाण सहज निरंतरता।
- अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या सहज निरंतरता।

125. **शास्त्र** :- कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित भेदों में एकसूत्रात्मकता (एक से अधिक कड़ियाँ)।

126. **शिक्षा-संस्कार** :- ज्ञान, विवेक, विज्ञान सम्पन्नता ।

127. **शिक्षण** :- तकनीक, उत्पादन कार्य के लिए आवश्यकीय कारीगरी का कर्माभ्यास।

128. **श्रम** :- शरीर और जीवन के संयुक्त रुप में जीता हुआ मानव कुशलता, निपुणता, पाण्डित्य पूर्वक उपयोगिता मूल्य, कला मूल्य को प्राकृतिक ऐश्वर्य पर स्थापित करना।

ज्ञ

129. **ज्ञान** :- सहअस्तित्व रूपी अस्तित्व ज्ञान, जीवन ज्ञान व

मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान।

130. **ज्ञाता** :- समझ में आना, प्रमाणित होना।

131. **ज्ञानावस्था** :- जीव चेतना से श्रेष्ठ मानव चेतना।

मानव चेतना से श्रेष्ठतर देव चेतना।

देव चेतना से श्रेष्ठतम दिव्य चेतना सहज प्रमाण परंपरा है।

त

132. **तृप्त परमाणु** :- गठनपूर्ण परमाणु :- परिणाम का अमरत्व सम्पन्न जीवन, क्रियापूर्णता-आचरणपूर्णता के लिए तत्पर होने वाला गठनपूर्ण परमाणु, चैतन्य इकाई।

ग्रंथ

''अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन''
बनाम
''मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद''

दर्शन (मध्यस्थ दर्शन)
★ मानव व्यवहार एवं दर्शन
★ मानव कर्म दर्शन
★ मानव अभ्यास दर्शन
★ मानव अनुभव दर्शन

वाद (सहअस्तित्ववाद)
★ व्यवहारात्मक जनवाद
★ समाधानात्मक भौतिकवाद
★ अनुभवात्मक अध्यात्मवाद

शास्त्र (अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन)
★ व्यवहारवादी समाजशास्त्र
★ आवर्तनशील अर्थचिंतन
★ मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान

योजना
★ जीवन विद्या योजना
★ मानव संचेतनावादी शिक्षा-संस्कार योजना
★ परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था योजना

संविधान
★ मानवीय आचार संहिता रूपी मानवीय संविधान सूत्र व्याख्या

परिभाषा
★ परिभाषा संहिता

अन्य
★ विकल्प एवं अध्ययन बिंदु
★ आरोग्य शतक

:: मध्यस्थ दर्शन आधारित उपयोगी संकलन ::

परिचयात्मक संकलन

★ जीवन विद्या एक परिचय

सहयोगी संकलन

★ संवाद - भाग-1

★ संवाद - भाग-2

पुस्तक प्राप्ति संपर्क एवं निःशुल्क PDF डाउनलोड के लिए :-

Website : www.madhyasth-darshan.info

Email. : books@madhyasth-darshan.info